भाषा, समाज और समकालीन साहित्य

(Bhasha, Samaj Aur Samkalin Sahitya)

संपादक

डॉ. दत्ता साकोले

डॉ. मुकुन्द गायकवाड

आदित्य प्रकाशन

राजगड ऑफिस, खर्डेकर स्टॉप

औसा रोड, लातूर

ज्ञान - विज्ञान विमुक्तये

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
एवं
शिक्षण महर्षि ज्ञानदेव मोहेकर महाविद्यालय, कलम
के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित,

द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

२७ तथा २८ जनवरी २०१७

भाषा, समाज और समकालीन हिन्दी साहित्य

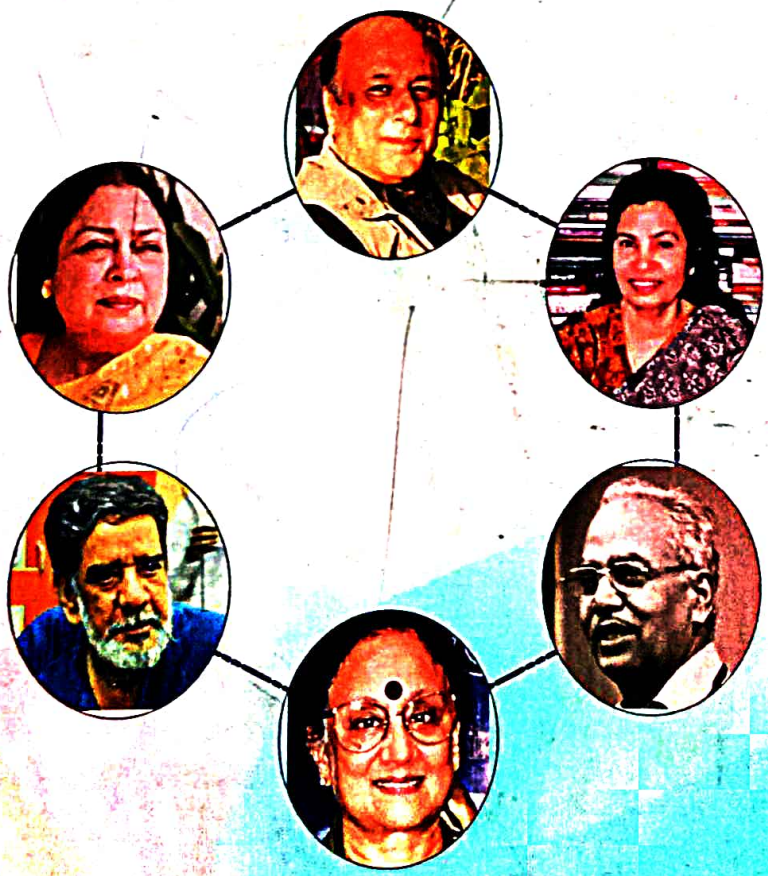

मार्गदर्शक
डॉ. अशोकराव मोहेकर

अध्यक्ष
डॉ. मुकुंद गायकवाड

संपादक
डॉ. दत्ता साकोळे

भाषा, समाज और समकालीन साहित्य

(Bhasha, Samaj Aur Samkalin Sahitya)

संपादक	:- डॉ. दत्ता साकोले
	:- डॉ. मुकुन्द गायकवाड
I S B N	**:- 978-93-83109-30-2**
	:- Aditya Prakashan, Latur
प्रकाशन तिथि	:- २७/०१/२०१७
मुद्रक	:- भरत ग्राफिक्स कळंब
अक्षर जुळवणी	:- शिंपले मारुती, स्नेहा बनसोडे
मुखपृष्ठ	:- गणेश सातपुते
प्रकाशक	:- आदित्य प्रकाशन, राजगड ऑफिस, खर्डेकर स्टॉप औसा रोड, लातूर

किमत :- २०० रु.

समकालीन हिंदी उपन्यास

अनु.	विषय	नाम	पृष्ठ सं.
29.	समकालीन हिंदी उपन्यास : एक मूल्यांकन	डॉ. सतीश यादव	109
30.	हिंदी उपन्यास और दलित जीवन	प्रा.डॉ. दळवे सुर्यकांत	115
31.	समकालीन हिन्दी उपन्यासों में आदिवासी स्त्री की त्रासदी	डॉ. संतोष येरावार	118
32.	समकालीन हिन्दी उपन्यासों में चित्रित विस्थापन की समस्याएँ	प्रा. मारोती यमुलवाड	123
33.	समकालीन हिन्दी उपन्यास साहित्य में महिला उपन्यासकार	प्रा.डॉ. पवार राजाभाऊ	128
34.	समकालीन हिन्दी उपन्यास आदिवासी और झारखंड आंदोलन	प्रा.डॉ. संजय नाईनवाड	131
35.	समकालीन उपन्यासों में चित्रित विधवा स्त्री की समस्याएँ	डॉ. सय्यद अमर फकिर	135
36.	मैत्रयी पुष्पा कृत फरिश्ते निकले में व्यक्त स्त्री विमर्श	नितीन अरुणराव इंगळे	141
37.	समकालीन हिन्दी उपन्यास : बेतवा बहती रही	प्रा.डॉ. सुजितसिंह परिहार	143
38.	समकालीन महिला उपन्यासकार	शितल कुंभार	146
39.	शिवमुर्ति के उपन्यास में दलितों की व्यथा का जिवंत चित्रण	प्रा. डॉ. ऐ.जे. बेवले	149
40.	समकालीन हिंदी उपन्यास में नारी चित्रण	सविता नागरे	154
41.	धरती धन न अपना उपन्यास में जमीनदार और मजदूर संघर्ष	नवनाथ गाडेकर	158
42.	समकालीन हिन्दी उपन्यास में दलित चेतना	प्रा. मंत्री आडे	161
43.	समकालीन मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में चित्रित नारी	आशा शर्मा	167
44.	समकालीन हिन्दी उपन्यासों में स्त्री विमर्श एवं परिवार संस्था	आदिनारायण बदावत	169
45.	समकालीन स्त्री अस्तित्व का प्रतिबिंध चाक - उपन्यास	डॉ. जे. नागराज	171
46.	समकालीन हिन्दी उपन्यास और भारतीय ग्रामीण किसान - जीवन	एम. संतोष	173
47.	समकालीन हिन्दी उपन्यास में आदिवासी जीवन	परिमल श्रीनिवास	175
48.	समकालीन हिन्दी दलित उपन्यासों में दलित चेतना	प्रा.डॉ. सुचिता गायकवाड	178

32. समकालीन हिंदी उपन्यासों में चित्रित विस्थापन की समस्याएँ

प्रा. मारोती यमुलवाड
स्नातक एवं स्नातकोत्तर
हिंदी विभाग
वलभीम महाविद्यालय, बीड
मो. नं. 8793697708

समकालीन हिंदी उपन्यास में सम्मिलित वर्तमान समस्याओं में विस्थापन का महत्वपूर्ण स्थान है। क्योंकि आज मानव ऐसे समय में जी रहा हैं जहाँ हर कदम पर उन्हें मानसिक तथा शारीरिक विस्थापन का दर्द सहना पड रहा है। मूलत: अपने जन्मस्थान से नये जगह की ओर प्रस्थान की प्रक्रिया ही विस्थापन है, लेकिन वर्तमान संदर्भ में राजनीतिक अभियोग, आंतरिक कलह, परिस्थितिक पदावनति, विकास योजनाओं के कारण ही लोगों के स्थानांतरण अधिक होते हैं। भारत में विस्थापन का सर्वाधिक प्रभाव जनजातियों पर पडा है, जो कुल विस्थापितों का लगभग आधे से अधिक है। इस जनजातीय विस्थापन का कारण देश के सामाजिक, आर्थिक विकास हेतु प्रारंभ की गई विभिन्न योजनाओं का निर्माण है। जैसे- बृहद उद्यगों की स्थापना, जलविद्युत परियोजनाओं का निर्माण, खनिज संसाधनों का दोहन, रेल तथा सडक मार्गों का निर्माण तथा आण्विक संयत्रों, सैन्य बस्तियों इत्यादि की स्थापना आदि मुख्यत: जनजातीय क्षेत्रों में हुई और इसके लिए वहुत अधिक भूमि का अधिग्रहण किया गया है। परिणाम स्वरूप अधिकांश जनजातियों को विस्थापित किया गया, जो वहाँ के मूल निवासी है। तथा उनके पुर्नवास की पर्याप्त व्यवस्था न होने के कारण यह विस्थापन कई समस्याओं के लिए उत्तरदायी बना।

समकालीन हिंदी उपन्यासों में वाँधों से उत्पन्न विस्थापन का सही चित्रण मिलता है। आज औद्योगिक विकास से वडे पैमाने पर मानवीय विस्थापन हो रहा है। विकास योजनाओं में प्रमुख स्थान महाकाय वाँध निर्माण का है। विश्व भर के वाँध निर्माण में तृतीय स्थान भारत का है। 'डूब' एवं 'पार' उपन्यासों में वीरेन्द्रजैन ने मध्यप्रदेश में वेतवा नदी के तट पर बाँध बनाने की योजना के तहत् जिस जनजीवन का विस्थापन हो रहा है, उसका प्रभावपूर्ण चित्रण किया है। लडैई गाँव को डूब क्षेत्र घोषित किया जाता है। वाँध में पानी भरने के साथ-साथ गाँववालों को मजवूरन, विस्थापित होना पड़ता है।

'डूव' उपन्यास में दिखाया है कि वाँध वन रहा है तो ज़ाहिर सी बात है कि वहाँ काम की या रोज़गार की कोई कमी नहीं होगी। लेकिन सरकार और ठेकेदारों की तरफ से यह निर्णय लिया गया है कि आसपास के किसी भी गाँव के किसी भी आदमी को मज़दूरी नही दी जाएगी। इसका कारण महज़ इतना है कि "यहाँ के स्थानीय आदमी मन लगाकर पूरे समय काम नहीं करेंगे। क्योंकि वे अपने तीज-त्योहार मनाना नही छोडेंगे काम की खातिर। घर-परिवार के शादी-व्याह में शामिल होना भी न त्यागेंगे। कोई बीमार